आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 20/03/2026; Revised: 21/3/2026; Accepted: 22/3/2026; Published: 28/03/2026

वेद, उपनिषद तथा लोक ज्ञान परंपरा

डॉ.सुधामनी

सह- प्राध्यापक

सरकारीय.आर.सी कॉलेज ऑफ कॉमर्स अंड मैनेजमेंट

रसे कोर्स रोड, बैंग्लोर-1

मोबाइल: 8971843352

ई मेल : sudhamani905@gmail.com

डॉ.सुधामनी, वेद, उपनिषद तथा लोक ज्ञान परंपरा, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक 1/मार्च 2026**,(83 -88)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19487407

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

सारांश : वेद हिन्द् धर्म के बहुत प्रचीन तथा पवित्र ग्रंथ है। वेद का अर्थ है ज्ञान । वेद मानवीय सभ्यता के विभिन्न ज्ञान विज्ञान, परम्परा और संस्कृति का द्योतक है। वेद को श्रुती कहते है अर्थात श्रवण करना होता है। वेद के प्रमुख रूप से चार भेद माना गया है। उपनिषद हिंदू धर्म के सर्वोच्च दार्शनिक ग्रंथ माना गया हैं, जो वेदों के अंतिम भाग (वेदांत) के रूप में आत्मज्ञान, ब्रह्म, और सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को समझाते हैं। उपनिषद सनातन संस्कृति के महत्त्वपूर्ण श्रुति धर्मग्रन्थ है। उपनिषद को वेदांत भी कहा जाता है। लोक ज्ञान परंपरा भारत की हज़ारों साल पुरानी, मौखिक और व्यावहारिक विरासत है, जो वेदों, पुराणों, संत साहित्य और लोकगीतों/कथाओं के माध्यम से पीढ़ियों तक हस्तांतरित होती है।

शब्द संकेत : हिन्दू धर्म, साहित्य, ज्ञान भंडार, वेद, सभ्यता,

वेद

हिंदू धर्म के सबसे प्राचीन, पवित्र और आधारभूत ग्रंथ हैं, जो ज्ञान के अगाध भंडार हैं। संस्कृत के 'विद्' धातु से बने 'वेद' का अर्थ है 'ज्ञान'। इन्हें 'श्रुति' (सुना हुआ) भी कहा जाता है, क्योंकि इन्हें ऋषियों द्वारा सुनकर याद किया गया था।वेद का चार भेद माना गया है : ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद, जो ईश्वरीय ज्ञान का सार माने जाते हैं। वेद शास्त्र है वेदांग वैदिक-सहायक विज्ञान है। वेद मानवीय सभ्यता के विभिन्न ज्ञान विज्ञान, परम्परा और संस्कुति का द्योतक है। वह किसी एक साहित्यक विशेष का उल्लेख नहीं करता, साहित्य के एक विशाल कोश को दर्शाता है। वेद को श्रुती कहते है अर्थात श्रवण करना होता है। यह मुख्य रूप से श्रवण वर्णन करता है। भारतीय पारंपरिक विचारों के अनुसार 'वेद ' को प्रकट ग्रंथ, स्व-साक्ष्य माना गया है। यह मानव द्वारा रचित नहीं है। वैदिक मंत्र या छंद केवल रुशियों द्वारा देखे और बोली गयी है। ये रुषी लोग तो मंत्रों के लेखक नहीं थे और न हीम मंत्रों के विषय वस्तु के व्यख्याकार थे। महान वैदिक टीकाकार सायन ने वेद की एक परिभाषा दी है। वेद के द्वारा इच्छा की प्राप्ती या अनिच्छा की परिहार होती है। वेद की परिभाषा यह है कि वेद तो मंत्रों तथा ब्रह्मणों का सम्मिलित रूप है। भारतीय दर्शन का आरंभ वेदों से होता है। वेद भारत की कदाचित संसार की प्राचीनतम साहित्यक संपत्ती तथा ज्ञान राशी का भंडार है।

वेद का महत्व

वेद का महत्व इस प्रकार है कि वेद सबसे ्प्राचीन,सर्वप्रथम एवं सर्वस्वीक्रुत ग्रंथ है। संस्क्रुत भाषा में गद्य तथा कविता के रूप में वेद कॊ सर्वॊपरी ज्ञान माना गया है। हिन्दुओं के धर्म तथा संस्क्रुती का मूला आधार वेद है। वेद में उच्च आध्यात्मिक ज्ञान के साथ - साथ दुनिया का ज्ञान भी शामिल है। वेद अपनी पवित्रता तथा निर्मलता में अद्वितीय है । वेद सच्चे ज्ञान का एकमात्र विशुद्ध अन्तर्धन है। वैदिक भाषा संक्षिप्त तथा सूक्ष्म है।

वेद के चार भेद

1) रुग्वेद 2) यजुर्वेद 3) सामवेद 4) अथर्ववेद वेद ।

वेद चार प्रमुख हैं - ऋग्वेद (ज्ञान), यजुर्वेद (कर्म), सामवेद (उपासना/संगीत) और अथर्ववेद (विज्ञान/जीवन)। भारतीय परंपरा के अनुसार ये सनातन धर्म के आधारभूत ग्रंथ हैं, जो ऋषियों द्वारा श्रुति रूप में प्राप्त किए गए। ये वेद ज्ञान, योग, चिकित्सा और जीवन के विभिन्न रहस्यों का समावेश करते हैं।

1) ऋग्वेद: यह सबसे प्राचीन और ज्ञान का वेद है, जिसमें देवताओं की स्तुति में ऋचाएं (मंत्र) हैं।

2) यजुर्वेद: इस वेद में यज्ञ और कर्मकांड के नियम व विधि विधान वर्णित हैं।

3) सामवेद: यह संगीत और भक्ति का वेद है, जिसके मंत्र गाए जा सकते हैं।

4) अथर्ववेद: इसमें जीवन, स्वास्थ्य, आयुर्वेद और दैनिक जीवन के रहस्यों का वर्णन है।

ऋग्वेद

ऋग्वेद को चारों वेदों में सबसे प्राचीन माना जाता है। इस को २ प्रकार से बाँटा गया है। प्रथम प्रकार में इसे १० मण्डलों में विभाजित किया गया है। कुल ऋचाएं 10647 हैं। दूसरे प्रकार से ऋग्वेद में 64 अध्याय हैं। आठ-आठ अध्यायों को मिलाकर एक अष्टक बनाया गया है। ऐसे कुल आठ अष्टक हैं। प्रत्येक अध्याय को वर्गों में विभाजित किया गया है। वर्गों की संख्या भिन्न-भिन्न अध्यायों में भिन्न भिन्न ही है। कुल वर्ग संख्या 2024 है। प्रत्येक वर्ग में कुछ मंत्र होते हैं।

यजुर्वेद

इसमें गद्य और पद्य दोनों ही हैं। इसमें यज्ञ कर्म की प्रधानता है। प्राचीन काल में इसकी 101 शाखाएं थीं, लेकिन वर्तमान में केवल पांच शाखाएं हैं - काठक, कपिष्ठल, मैत्रायणी, तैत्तिरीय, वाजसनेयी। इस वेद के दो भेद हैं - कृष्ण यजुर्वेद और शुक्ल यजुर्वेद। कृष्ण यजुर्वेद का संकलन महर्षि वेद व्यास ने किया है। इसका दूसरा नाम तैत्तिरीय संहिता भी है। इसमें मंत्र और ब्राह्मण भाग मिश्रित हैं। शुक्ल यजुर्वेद - इसे सूर्य ने याज्ञवल्क्य को उपदेश के रूप में दिया था। इसमें 15 शाखाएं थीं परन्तु वर्तमान में माध्यन्दिन को जिसे वाजसनेयी भी कहते हैं प्राप्त हैं। इसमें 40 अध्याय, 303 अनुवाक एवं 1975 मंत्र हैं। अन्तिम चालीसवां अध्याय ईशावास्योपनिषद है।

सामवेद

यह गेय ग्रन्थ है। इसमें गान विद्या का भण्डार है, यह भारतीय संगीत का मूल है। ऋचाओं के गायन को ही साम कहते हैं। इसकी 1001 शाखाएं थीं। परन्तु आजकल तीन ही प्रचलित हैं - कोथुमीय, जैमिनीय और राणायनीय। इसको पूर्वार्चिक और उत्तरार्चिक में बांटा गया है। पूर्वार्चिक में चार काण्ड हैं - आग्नेय काण्ड, ऐन्द्र काण्ड, पवमान काण्ड और आरण्य काण्ड। चारों काण्डों में कुल 640 मंत्र हैं। फिर महानाम्न्यार्चिक के 10 मंत्र हैं। इस प्रकार पूर्वार्चिक में कुल 650 मंत्र हैं। छः प्रपाठक हैं। उत्तरार्चिक को 21 अध्यायों में बांटा गया। नौ प्रपाठक हैं। इसमें कुल 1225 मंत्र हैं। इस प्रकार सामवेद में कुल 1875 मंत्र हैं। इसमें अधिकतर मंत्र ऋग्वेद से लिए गए हैं। इसे उपासना का प्रवर्तक भी कहा जा सकता है।

अथर्ववेद

इसमें गणित, विज्ञान, आयुर्वेद, समाज शास्त्र, कृषि विज्ञान, आदि अनेक विषय वर्णित हैं। कुछ लोग इसमें मंत्र-तंत्र भी खोजते हैं। यह वेद जहां ब्रह्म ज्ञान का उपदेश करता है, वहीं मोक्ष का उपाय भी बताता है। इसे ब्रह्म वेद भी कहते हैं। इसमें मुख्य रूप में अथर्वण और आंगिरस ऋषियों के मंत्र होने के कारण अथर्व आंगिरस भी कहते हैं। यह 20 काण्डों में विभक्त है। प्रत्येक काण्ड में कई-कई सूत्र हैं और सूत्रों में मंत्र हैं। इस वेद में कुल 5977 मंत्र हैं। इसकी आजकल दो शाखाएं शौणिक एवं पिप्पलाद ही उपलब्ध हैं। अथर्ववेद का विद्वान् चारों वेदों का ज्ञाता होता है। यज्ञ में ऋग्वेद का होता देवों का आह्नान करता है, सामवेद का उद्गाता सामगान करता है, यजुर्वेद का अध्वर्यु देव:कोटीकर्म का वितान करता है तथा अथर्ववेद का ब्रह्म पूरे यज्ञ कर्म पर नियंत्रण रखता है।

उपनिषद

उपनिषद हिंदू धर्म के सर्वोच्च दार्शनिक ग्रंथ माना गया हैं, जो वेदों के अंतिम भाग (वेदांत) के रूप में आत्मज्ञान, ब्रह्म, और सृष्टि के गूढ़ रहस्यों को समझाते हैं। कुल 108 प्रमुख उपनिषदों में से, 'गुरु के पास

बैठना' (उप + नि + सद्) के अर्थ के साथ, इनमें ईशावास्य, केन, और कठ जैसे मुख्य उपनिषद आत्मा व मोक्ष की शिक्षा देते हैं। ये ग्रंथ कर्मकांड के बजाय ज्ञान-कांड पर जोर देते हैं।

हिन्दू धर्म में जितना महत्वपूर्ण स्थान वेदों, पुराणों, रामायण, भगवद गीता, महाभारत, रामचरितमानस आदि ग्रंथों का है, उतना ही महत्व उपनिषदों का भी है। उपनिषद सनातन संस्कृति के महत्त्वपूर्ण श्रुति धर्मग्रन्थ है। उपनिषद को वेदांत भी कहा जाता है। उपनिषद की कुल संख्या 108 हैं। शंकराचार्य के अनुसार उपनिषद् का मुख्य अर्थ ब्रह्मविद्या है ।

'उपनिषद्' शब्द 'उप' और 'नि' पूर्वक 'सद्' धातु से 'क्विप्' प्रत्यय जोड़ने से निष्पन्न होता। पारिभाषिक रूप से उपनिषद् को अध्यात्मविद्या कहा गया है। यह ऐसी विद्या है कि जिसका अध्ययन करने से दृष्ट एवं आनुश्रविक (श्रुतिगम्य) विषयों में से तृष्णा को छोड़कर मुमुक्षु लोग संसार की बीजभूत अविद्या का नाश कर सकते हैं।

उपनिषद् का रचना काल:-

उपनिषदें 108-Upanishad in Hindi) वेदों का ही आंतरिक भाग रूप माना जाता हैं। इसलिए वेदों का निर्माण का समय है, वही उपनिषदों के निर्माण का भी समय माना जाता है।

उपनिषद का अर्थ है,बैठ्कर सुनना। प्राचीनकाल में ग्यानार्जन करने हेतु शिष्य लोग नीचे बैठकर वेद सार सुनते थे, इसे ' उपनिषद ' कहते है। 11 प्रमुख उपनिशद इस प्रकार है,

1) ईशावास्योपनिषद
2) केनोपनिषद
3) कठोपनिषद
4) प्रष्णोपनिषद
5) मुण्डकोपनिषद
6) माण्डुक्योपनिषद
7) ऐतरेयोपनिषद
8) तैत्तीरियोपनिषद
9) श्वेतारश्वेतोपनिषद
10) ब्रुहदारण्यकोपनिषद
11) छंदोग्योपनिषद

उपनिषद का महत्व

उपनिषद भारतीय दर्शन और आध्यात्मिकता के आधारभूत स्तंभ हैं, जो ब्रह्मज्ञान (परम सत्य), आत्मा-परमात्मा की एकता, और मोक्ष प्राप्ति का गूढ़ ज्ञान प्रदान करते हैं। वेदों के अंतिम भाग होने के कारण इन्हें 'वेदांत' कहा जाता है। ये ज्ञान, आत्म-साक्षात्कार, अद्वैतवादी चिंतन और जीवन-मृत्यु के चक्र से मुक्ति का मार्ग दिखाते हैं, जो मानव को असत्य से सत्य और अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं।

लोक ज्ञान परंपरा

लोक ज्ञान परंपरा भारत की हज़ारों साल पुरानी, मौखिक और व्यावहारिक विरासत है, जो वेदों, पुराणों, संत साहित्य और लोकगीतों/कथाओं के माध्यम से पीढ़ियों तक हस्तांतरित होती है। यह ज्ञान केवल विद्वानों तक सीमित न होकर कबीर, मीरा, रैदास जैसे संतों द्वारा लोकभाषा में जन-जन तक पहुँचाया गया, जो सामाजिक समरसता, नैतिक मूल्यों और जीवन कौशल पर आधारित है।

लोक ज्ञान परंपरा एक निर्मल तथा निश्चल परंपरा है । इसमे अनेक रुषिमुनियों की आस्था, मौल्य ज्ञान, भक्ती, संस्क्रुती, सभ्यता, कर्म का समागम कह सकते है। यह अत्यंत गहरा तथा विशाल है। भारतीय ज्ञान परंपरा को प्रवाहित करने वाले है गद्य, उपन्यास, संस्मरि, एकांकी, नाटक, , यात्रा साहित्य तो संसार के विभिन्न विचारधाराओं को समाज के सामाज के समक्ष प्रस्तुत करती है।

यह परंपरा जीवन को नवीन आलोक देने वाली, नयेमूल्यों से जोड़ने वाली नयेज्ञान का प्रतीक होती है । भारतीय ज्ञान परंपरा के वैदिक, दार्शनिक, पौराणिक तत्व , साहित्य के रूप में निरंतर बहती रहती है। यह परंपरा सबसे सुंदर, सद्रुढ तथा शक्तिशाली परंपरा है।

भारतीय ज्ञान परंपराओं में गुरु शिष्य परंपरा का अपना अनूठा स्थान है, जो युगों-युगों से भारत को ही नही पूरे विशव को प्रकाशित करती है । भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व में अस्तित्व रख चुकी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रमुख आधार वेद है। ज्ञान का यह स्वरूप तर्कमूलक ,मूल्यनिष्ठ, जिग्यासापूर्ण तथा सामाजिक उद्धेष्य से बन्धा हुआ है। गौतम बुद्धा के अनुसार मानव की बुद्धी परीक्षणात्मक होनी चाहिए। चिंतन के मूल्यनिष्ठ लोक पक्ष की धारा वेदों, उपनिषदों , महाकाब्यों से आगे बढकर धर्मशास्त्र के साथ भी नाथा जोड लिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा बहुत पुरानी है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व

यह एक सम्रुद्ध विरासत है। इसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और अलौकिक कर्म ,धर्म और भोग का समन्वय है। भारतीय ज्ञान परंपरा में भरत मुनी ने पहला नाट्यशास्त्र लिखा। प्राचीन शिक्षा मानवता को प्रामुख्यता देती थी। भारतीय ज्ञान परंपरा संस्क्रुती की सुरक्षा करती है।

निष्कर्ष :- वेद, उपनिषद तथा भारतीय ज्ञान परंपरा, हमारे साहित्य तथा संस्क्रुती का ज्ञान भंडार है। वे मानवीय मूल्य, सभ्यता,चिंतन-मंथन का द्योतक भी कह सकते है। वे मूल्यनिष्ठ, जिग्यासापूर्ण और सामजिक उद्धेष्य से बंधा हुआ है। आधुनिक मानव वैग्यानिक तथा तांत्रिक क्षेत्र में आगे बढ रहा है लेकिन मानवीय मूल्य, चैन, शांती, सबंधों से वंचित है। वह अपना जीवन सुधारने के लिए प्रचीन ग्रंथ भंडार
का परिचय जरूरी है।

संदर्भ सूची :

1) अंतर्जाल

2) https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%B5%E0%A5%87%E0%A4%A6

3) https://www.superprof.co.in/blog/the-four-types-of-vedas/

4) https://www.mahakavya.com/introduction-of-four-vedas-in-hindi-and-english/

5)https://hi.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%89%E0%A4%AA%E0%A4%A8%E0%A4%BF%E0%A4%B7%E0%A4%A6%E0%A5%8D

6)https://jayvijay.co/2024/09/20/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF-%E0%A4%9C%E0%A5%8D%E0%A4%9E%E0%A4%BE%E0%A4%A8-%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%82%E0%A4%AA%E0%A4%B0%E0%A4%BE-%E0%A4%85%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%A5/

****